आरएनआई नं. . RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं . RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस, उदयपुर
प्रेषण दिनांक -प्रतिदिन

# मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2569 • उदयपुर, गुरुवार 06 जनवरी, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

## आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

### दानदाताओं ने बांटे 1000 कंबल

दिव्यांगों की सेवा की अपनी प्रेरक यात्रा में नारायण सेवा संस्थान ने उदयपुर में 'अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार समारोह का आयोजन किया। संस्थापक चेयरमैन पूज्य श्रीकैलाश जी मानव और अध्यक्ष सेवक प्रशांत जी भैया ने 100 से अधिक दानदाताओं को प्लैटिनम, डायमंड, गोल्ड, रजत, और कांस्य श्रेणियों में पुरस्कार प्रदान कर उन्हें सम्मानित किया। सेवक प्रशांत जी भैया ने बताया कि संस्थान ने पिछले 36 वर्षो में 3.5 लाख से ज्यादा दिव्यांगों के निःशुल्क ऑपरेशन किए और उन्हें चिकित्सा सेवाओं, दवाइयों और प्रौद्योगिकी का लाभ देकर पूर्ण सामाजिक आर्थिक सहायता प्रदान की है। कार्यक्रम के दौरान फिजियोथेरेपी, कैलीपर्स, मॉड्यूलर इक्विपमेंट्स, ट्राइसाइकल, व्हीलचेयर, लिम्स और कई अन्य आधुनिक प्रकार के उपकरण जरूरतमंदों को निःशुल्क प्रदान किए गए, दानदाताओं के माध्यम से जरूरतमंदों को एक हजार कम्बलों का भी वितरण हुआ। कार्यक्रम सह संस्थापिका श्रीमती कमला जी, निदेशिका वंदना जी, पलक जी व ट्रस्टी–निदेशक देवेन्द्र जी चौबीसा ने भी विचार व्यक्त किए।



### निराश्रित बालकों को मिली भविष्य की दिशा



उदयपुर जिले में संचालित 21 निराश्रित बालगृहों में आवासित 14–17 आयुवर्ग के 120 बालक–बालिकाओं के कॅरियर सम्बन्धी परामर्श के लिए संस्थान के बड़ी परिसर में जिला बाल कल्याण समिति के सहयोग से काउंसलिंग कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। यह आयोजन निराश्रित बालकों के आजीविका चयन में आवश्यक दिशा–निर्देश एवं उनके सुखद भविष्य के निर्धारण को लेकर जिला कलक्टर के निर्देश पर जिला बाल संरक्षण इकाई के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ। इस काउसलिंग शिविर में बालक–बालिकाओं को भविष्य में वे किस प्रकार रोजगार चुनें और कैसे इस हेतु समय–समय पर मार्गदर्शन प्राप्त करें? इसकी विस्तार से जानकारी दी गई। कांउसलिंग में विशेषज्ञ जे.आर. नागर विद्यापीठ विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. लालाराम जी जाट, डॉ. प्रिंस जी व डॉ. अंकित जी त्रिवेदी ने बालक–बालिकाओं का उनकी रुचि के अनुसार मार्गदर्शन दिया। इस मौके पर बाल कल्याण समिति के अध्यक्ष ध्रुवकुमार जी कविया और संस्थान के अध्यक्ष सेवक प्रशांत जी भैया ने भी बच्चों के भावी जीवन में उपयोगी जानकारी एवं प्रेरणा दी। संस्थान के परियोजना प्रभारी संजय जी दवे ने भी कार्यक्रम को सम्बोधित किया।

कार्यक्रम में नारायण सेवा संस्थान के निराश्रित बालगृह के साथ ही मीरा निराश्रित बालगृह झाड़ोल, भगवान महावीर निराश्रित बालगृह, सेवा परमो धर्म उदयपुर, जीवन ज्योति बालगृह सुखेर, अरण्य दर्शन बालगृह सेमारी, समिधा संस्थान सालेरा एवं राजकीय बालगृहों के बालक–बालिकाओं व उनसे सम्बन्धित अधीक्षकों ने भाग लिया। काउंसलिंग के दौरान 'मेरे सपने–मेरा कॅरियर' विषय पर खुली चर्चा भी हुई। जिसमें प्रतिभागी बालकों ने खुले मन से प्रश्न किए। जिनके जवाब बारी–बारी से बाल कल्याण समिति के अध्यक्ष कविया व सेवक प्रशान्त जी भैया ने देकर मार्गदर्शन किया। संचालन श्री जितेन्द्र जी वर्मा ने किया।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

आत्मीय स्नेह मिलन
एवं
भामाशाह सम्मान समारोह
स्थान व समय
रविवार 9 जनवरी 2022 प्रातः 11.00 बजे से

सुजानाद भवन, नई सड़क, ग्वालियर (म.प्र.) 7412060406

जैन मंदिर, जैनधर्मशाला, 56/62 शाहगंज, जीरो रोड, अजंता सिनेमा के पास, प्रयागराज, यूपी 9351230393

रविवार 8 जनवरी 2022 प्रातः 5.00 बजे से

मेघराज भवन, नियर संतोषी माता मंदिर, इसामिया बाजार, कोठी, हैदराबाद, 9573938038

इस सम्मान समारोह में
सभी दानवीर, भामाशाह सादर आमंत्रित है।

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन एवं
कृत्रिम अंग (हाथ-पांव) माप शिविर
रविवार 9 जनवरी 2022 प्रातः 9.00 बजे से
स्थान

मुम्बई माता बाल संयोजन संस्था, महात्मा गांधी, विद्यालय के सामने, वाडा रोड, राजगुरु नगर, पूणे, महाराष्ट्र

समर्पण, अशोक विहार कॉलोनी, फेज-1, पहाड़िया, वाराणसी, उत्तरप्रदेश

पारस मंगल कार्यालय, पारस नगर, शेंदूर्णी जलगांव, महाराष्ट्र

साथ साथी संघ, एल आई जी. 9/3, प्रगति नगर फेस, 4, के.पी.एच.बी. कॉलोनी, लोढ़ा काम्पलेक्स के पास, कुकटपल्ली, तेलंगाना, आन्ध्रप्रदेश

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

# दिव्यांगों के हित में दिव्य संकल्प

विजन डॉक्यूमेंट में वर्ष 2022 के अन्त तक दुर्घटनाग्रस्त दिव्यांगों के लिए उदयपुर में सेंट्रल फेबिक्रेशन यूनिट स्थापित किया जाना भी शामिल है। इससे प्रतिदिन सैकड़ो दिव्यांगग्रस्त व अंगविहिन जनों को अत्याधुनिक सुविधाजनक कृत्रिम हाथ–पैर मिलने लगेंगे।

संस्थान इसके माध्यम से भारत भर के 50 हजार दिव्यांगों को प्रतिवर्ष मदद पहुंचा सकेगा। संस्थान के वर्तमान सेवा कार्यो की जानकारी देते हुए सेवा प्रशांत जी मैया के सानिध्य में जयपुर में व निदेशक श्रीमती वंदना जी अग्रवाल वे सानिध्य में उदयपुर मुख्यालय पर बड़ी संख्या में जरूरतमंदों को ट्राइसाइकल, व्हीलचेयर व सहायक उपकरण बांटे गए तथा 40 को कृत्रिम अंग लगाए गए। संस्थान की सूरत, हैदराबाद, लखनऊ, मथुरा, बड़ौदा, अहमदाबाद, मुंबई, लुधियाना, दिल्ली, नागपुर सहित 22 शाखाओं में भी इस प्रकार के कार्यक्रम आयेजित हुए और वहां के जिला प्रशासनिक अधिकारियों से भेटकर दिव्यांगता के क्षेत्र में विशेष कार्य करने की पहल की गई।

दिव्यांगों की सेवाओं में सोशल कॉरपोरेट रिस्पॉनिसबिलिटी के तहत ए. आर. टी. हाउसिंग एवं राइसो इंडिया लिमिटेड ने भी अपना सहयोग प्रदान किया।

## नारायण सेवा संस्थान का साथ मिला अब मैं खुश हूं !

जन्म के 6 माह बाद ही पोलियो की शिकार हुई स्वाति (22) नारायण सेवा संस्थान में पिछले वर्ष पोलियो केरेक्टिव सर्जरी के बाद अब बिना सहारे खड़ी होती और चलती है। गोरखापुर (उप्र) में बीटीएस की छात्रा स्वाति सिंह ऑपरेशन के बाद चेकअप के लिए आई हैं।

उन्होंने बताया कि बीस वर्ष तक जो पीड़ा भोगी, उसे याद करती हूँ तो रो पड़ती हूँ। उत्तरप्रदेश के कुछ हॉस्पीटल में लम्बा इलाज भी चला, लेकिन फायदा नहीं हुआ। घिसकर चलना ही उनकी नियति था। नारायण सेवा संस्थान के बारे में टेलीविजन चैनल से जानकारी मिली तो गत वर्ष नवम्बर में यहाँ आई और डॉ. साहब ने घुटने का ऑपरेशन किया। उसके बाद अब केलिपर्स की सहायता से वे खड़ी भी होती हैं व बिना सहारे चलती भी हैं। पाँव का टेढ़ापन भी काफी ठीक हो गया है।

## प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

सुमन्त्र जी ने, मंत्रीवर ने सोचा– हमारे भूपाल, चक्रवर्ती सम्राट दशरथजी महाराज प्रातःकाल मुर्गे की बांग जैसे ही आती है तो मुर्गे की बांग के साथ हमारे चक्रवर्ती सम्राट दशरथ जी उठ जाया करते हैं। आज क्या हुआ? आज छः बजे गयी, दरवाजा नहीं खुला। दरवाजा खटखटाया! देखा, दशरथ जी अचेत होकर गिर पड़े हैं। कैकेयी जैसे भूखी शेरनी की तरह, पापिनी शेरनी की तरह। क्रूर आँखों से, कठोरता जैसे कठोरता वहाँ पैदा हो गयी? भाटा पैदा हो गया। कैकेयी बड़ी क्रूर आँखों से देखती हुई सुमन्त्रजी को कहती हैं– जल्दी से रामचन्द्रजी को बुलालो। सुमन्त्र जी कहते हैं– माते, मेरे राजा अचेत होके गिर पड़े हैं। ये मूर्छित हो गये, क्या हो गया?

आज तो राम के राजतिलक का दिन है। आज तो हमारी खुशियों का दिन है, परन्तु ये क्या हो गया? कैकेयी को लगा कि मुझे और उसका दिया। क्या रामचन्द्र जी, रामचन्द्र जी करते हो? राज्य तो भरत को मिलेगा। राम को चौदह साल का वनवास का वरदान मैंने मांग लिया है। जाओ जल्दी से राम को बुला लाओ। सुमन्त्र जी को लगा, जैसे काठ मार गया हो। जैसे किसी ने अंगारे से जला दिया हो। लाला, कथा क्यों तो सुन रहे अपण? इसलिये सुन रहे हैं कि, हमें क्या करना चाहिये। हमें कैसा व्यवहार रखना चाहिये? हमें ऐसा काम करना चाहिये अपने मन से, वाणी से और कर्म से। तीन ही अपने हाथ में है। मन को बेकार की बातों में ले जा रहे है। कुभाव ला रहे है ये पाप है।

आज से 34 साल पहले जब नारायण सेवा प्रारम्भ हुई। बड़े भैया, बड़े–बड़े साधक, मंझले भैया, भैया ये साधक परिवार है। ये इसलिये दिव्यांगों के ऑपरेशन हो पा रहे है कि अपना साधक परिवार है। और इस परिवार में सब मिलझुल कर रहते हैं। सब के मन में एक ही चाह है, किसी के काम आ जाएं। सब के मन में एक ही चाह है, आँसू पौंछ लेवें। सबके मन में ये मालूम है
परिवर्तन से क्या घबराना, परिवर्तन ही जीवन है।

**धूप–छाँव के ऊलट फेर में, हम सबका शक्ति परीक्षण है।।**

## सम्पादकीय

जीवन को गुजारना भी संभव है तथा जीना भी। गुजारने का आशय है कि जो चल रहा है वह बस घिसटता रहे, जीवन उदासीनता व शिकायतों से भरा रहे। ऐसी स्थिति में भी झिकझिक करके भी जीवन गुजर जाता है। दूसरी ओर यह भाव रहता है कि मानव जीवन जैसी दुर्लभ योनि प्राप्त हुई है तो इस सलीके से जीयें। अपने लिये जीये, ओरों के लिये जीयें। जीवन दोनों दशाओं में व्यतीत हो जाता है पर गुजारने में मायूसी छाई रहती है, दुःखों का रोना चलता रहता है, असंतुष्टि का राग हर पल अलापा जाता है। जबकि जीने की तमन्ना व्यक्ति की सोच में बदलाव ला देती है। वह जीवन में संतुष्ट तो होता ही पर जीवन को शृंगारित करने के हर अवसर को खोज लेता है। वह अभाव को भी उत्सव में परिवर्तित कर देता है। ऐसी जीवन ही समाज व देश में योगदान करता है।

### कुछ काव्यमय

**भारी मन से जीना**
**इसे जीवन कैसे कहें ?**
**वे भूल जाते हैं कि**
**दुनिया में कैसे रहें ?**
**जीना तो आनन्द का उद्भाव**
**और संतोष की खान है।**
**ऐसे जीवन के लिए ही**
**ईश्वर ने रचे इंसान है।**

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

## सेवा बने दिनचर्या का अंग

सुबह जल्दी, बहुत जल्दी उठना, दुकान पर जाना, भट्टी चेतन करना, आलू उबालना, मसाले तैयार करना, दूध फेंटना और भी कई काम। उधर दुकान में झाड़ू लगाना, पानी भरना आदि। और यह कार्यक्रम रात में, देर रात तक कड़ाहियों के मांजनें और भट्टी ठंडी करने तक चलता रहता है। यह दिनचर्या, बल्कि कहना चाहिए जीवनचर्या है एक हलवाई की जो रात–दिन अपने परिवार के भरण–पोषण के लिए धनोपार्जन के काम में जुटा रहता है।

यदि यही व्यक्ति किसी दिन इस दिनचर्या से हट के कोई अन्य कार्य करे जिसमें धनोपार्जन की गुंजाईश न हो, उदाहरणार्थ– निःशुल्क सेवा आदि, तब उसका मस्तिष्क तेजी से दौड़ेगा– "यह कार्य करने में मुझे क्या लाभ होगा, कहाँ मेरे नाम का उल्लेख होगा– अथवा इतने घंटों की कार्य– हानि के अलावा

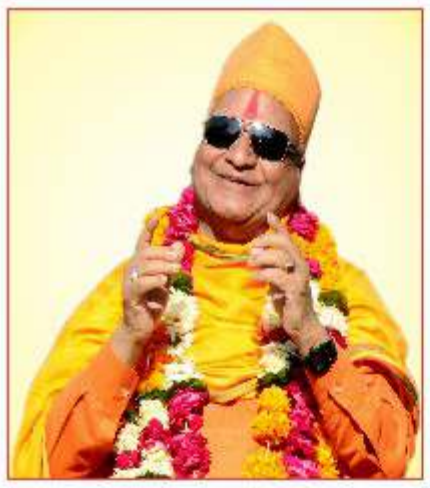

कुछ भी हाथ न लगेगा।" उस दिन घर लौटने पर उसकी पत्नी भी कहेगी –"आज तो आपने काफी काम किया है, थक गए होंगे।" सामान्य कार्यक्रम के अंतर्गत सुबह पांच बजे से रात ग्यारह बजे तक काम करने के उपरांत भी घर पहुंचने पर ऐसी टिप्पणी सुनने को नहीं मिलती। विचार किया जाय तो इसके पीछे दो कारण अनुभव होते हैं –धनोपार्जन और सामान्य दिनचर्या।

हलवाई ही क्यों, न्यूनाधिक रूप में प्रत्येक व्यक्ति का –संभवतः हमारा और आपका भी दृष्टिकोण इससे बहुत अधिक भिन्न नहीं है। सामान्य व्यक्ति प्रत्येक कार्य को धन की तुला पर तौलता है। सम्पूर्ण दिनचर्या ही धन पर आधारित हो गई है। लीक से हट कर कोई कार्य थकावट का कारण बन जाता है। वस्तुतः हमारी सोच ही ऐसी हो गई है। सेवा कार्य को हमने अपनी दिनचर्या में गिना ही नहीं। यही कारण है कि यह कार्य हमें "अतिरिक्त कार्य" लगता है, इसमें थकान होती है, संभवतः नाम न होने का दुःख भी होता है।

आइये, हम अपने सोच को बदलने का प्रयत्न करें। सेवा कार्य को भी दिनचर्या के अंग के रूप मानें ताकि इसके लिए अलग से प्रयास न करना पड़े, अलग से सोचने की आवश्यकता न पड़े। जीवन के अन्य कार्यों के साथ–साथ सेवा रूपी प्रभु कार्य भी निर्विघ्न चलता रहे।

**–कैलाश 'मानव'**

## अधिकारों का उपयोग

एक और प्रसंग आता है कि एक अत्यन्त निर्दयी और क्रूर राजा था। दूसरों को पीड़ा देने में उसको आनन्द आता था। उसका आदेश था कि उसके राज्य में एक या दो व्यक्तियों को फांसी लगनी ही चाहिए। उसके इस व्यवहार से प्रजा बहुत दुखी हो गयी। एक दिन उस राजा के राज्य के कुछ वरिष्ठजन इस समस्या को लेकर एक वरिष्ठ संत के पास पहुँचे। बोले महाराज हमारी रक्षा कीजिये। यदि राजा का ये कम जारी रहा तो पूरा नगर खाली हो

जायेगा। संत भी काफी दिनों से ये ध्येय सुन रहे हैं।

वे अगले ही दिन दरबार में जा पहुँचे। राजा ने उनका स्वागत किया और आने का प्रयोजन पूछा। संत बोले मैं आपसे एक प्रश्न करने आया हूँ। यदि आप शिकार खेलते हुए जंगल में जायें और मार्ग भूलकर भटकने लगे और प्यास के मारे आपके प्राण निकलने लगे। ऐसे में कोई व्यक्ति आपको सड़ा गला पानी लाकर आपको एक पात्र भर पानी पिलायें, कि तुम आधा राज्य दोगे तो वो पानी पिलायेगा। राजा ने कहा प्राण बचाने के लिये आधा राज्य देना ही होगा। संत बोले अगर वो गंधा पानी पीकर तुम बीमार हो जाओ और तुम्हारे प्राणों पर संकट आ जाये, तब कोई वैद्य तुम्हारे प्राण बचाने के लिये शेष आधा राज्य मांग ले, तो क्या करोगे? राजा ने तत् क्षण कहा– प्राण बचाने के लिये वो आधा राज्य भी दे दूँगा।

जीवन ही नहीं तो राज्य कैसा? संत बोले अपने प्राणों की रक्षार्थ आप अपना राज्य लुटा सकते हैं तो दूसरों के प्राण लेते क्यों हैं? संत का यह तर्क सुनकर राजा को चेतना आ गयी। वह सुधर गया। इस प्रसंग का सार यह है कि अपने अधिकारों का उपयोग लोकहित एवं विवेक सम्मत ढंग से किया जाना चाहिये।

**– सेवक प्रशान्त भैया**

## एक सेवाभावी मानव की जीवनी

**(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)**

सन् 2000 में दूसरी बार अमेरिका की यात्रा। वह न्यूयार्क में था, उन्हीं दिनों भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी भी अमेरिका आने वाले थे। न्यूयार्क में उनका एक सार्वजनिक कार्यक्रम था। कैलाश का बहुत मन था कि अटल जी के इस कार्यक्रम में भाग ले। उसके साथ सुभाष पालीवाल थे। दोनों उस पार्क में पहुँच गये जहां अटल जी का कार्यक्रम होने वाला था। कार्यक्रम शाम को था मगर ये लोग दोपहर के पहले ही पहुँच गये थे।

पार्क में उस समय चार–पांच लोग ही व्यवस्था का काम देख रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे उनके पास कार्यकर्ताओं की कमी है। भारत जैसा तो था नहीं, अमेरिका था, हर किसी को फुरसत कहां होती है। कैलाश इन 4–5 लोगों के पास गया और पूछा कि किसी तरह की मदद की आवश्यकता है क्या। उन्होंने तुरन्त इन दोनों को काम बता दिया। दोपहर दो बजे तक दोनों कड़ी मेहनत के साथ काम में जुटे रहे, काम भारी था फिर भी विदेश की धरती पर इस तरह की स्वयंसेवा कर कैलाश आनन्दित हो रहा था।

धीरे धीरे पुलिस वाले बढ़ते गये। दो बजे तक सारी व्यवस्थाएं पूर्ण हो गई तो पुलिसवालों ने सुरक्षा की दृष्टि से पूरा मैदान खाली करा लिया। इन दोनों को भी मैदान से बाहर जाने को कहा गया तो कैलाश के सिर पर तो मानो घड़ों पानी गिर गया। उसने इतनी मेहनत इसीलिये की थी इसी बहाने आगे का स्थान मिल जायगा। उसने पुलिस वालों को कहा कि वे तो सुबह से कार्य कर रहे है, उन्हें कैसे बाहर निकाला जा सकता है, एक बार बाहर निकल गये तो वापस अन्दर कौन आने देगा। पुलिस वालो ने यह बात सुन कर उन्हें दो पास दे दिये और कहा कि तुम्हें सबसे पहले अन्दर ले लेंगे।

पूरे पार्क की सुरक्षा व्यवस्था की जांच हो जाने के बाद इन दोनों को सबसे पहले प्रवेश दे दिया गया। धीरे धीरे पार्क में भीड़ बढ़ती गई, विशिष्ट अतिथि भी आने लगे। सुन्दर सिंह भण्डारी तब गुजरात के राज्यपाल थे, वे उदयपुर के ही थे इसलिये कैलाश उनसे आकर्षित था। जब भण्डारी उसकी बगल में आकर बैठ गए तो उसके अचरज व प्रसन्नता का पारावर नहीं था। कैलाश ने उन्हें अपना परिचय दिया, अपना कार्ड भी दिया।

**अंश - 201**

## रवित हुआ कुण्ठा और दिव्यांगता से मुक्त

रवित कुमार (26) नेपुर बदायूं के निवासी हैं। इने पिता राजकीय सेवा में है... परिवार में 6 सदस्य हैं। रवित ने बताया कि दिव्यांग होने के कारण मैं तनावग्रस्त रहने लगा। घर में मेरे अन्य भाई–बहिन सभी काम आराम से कर लेते थे पर मैं दिव्यांगता से मन ही मन घुटता रहता।

टीवी. पर देखे विज्ञापन पर मैं परिजनों के साथ उदयपुर आया.।

ऑपरेशन करवाया तो जिन्दगी में उत्मीद का अकुंरण हुआ.... मैं जीने के प्रति सोचने लगा.... मुझे भी दूसरे युवाओं की तरह कुछ काम करना चाहिए..... ऐसा सोच ही रहा था कि कोरोना लॉकडाउन लग गया। उसी दौरान नारायण सेवा संस्थान ने ऑनलाइन मोबाइल रिपेयरिंग क्लास आरम्भ की। मैंने बिना वक्त खोए पंजीयन करवा लिया।

पूरी शिददत से कोर्स किया परीक्षा में आए नम्बरों से मुझे यकीन हो गया कि मैं मोबाइल ठीक करना सीख गया हूं। अब घर से ही पड़ौसियों के मोबाइल सही करने लगा हूं... अपनी खुशी को शब्दों में बयान नहीं कर पा रहा हूं। नारायण सेवा ने मेरी जिन्दगी को ही पांवों पर ही खड़ा नहीं किया बल्कि मुझे कुंठा से बाहर निकाल मुझे जीने का हौसला भी दिया। मैं संस्था का धन्यवाद करता हूं।